वेदान्त आश्रम की मासिक ई - पत्रिका
वेदान्त पीयूष
वर्ष २२
अक्टूबर - २०२२
प्रकाशन - १०

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

अक्टूबर 2022

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

ॐ

सदाशिवसमारम्भाम्

शंकराचार्य मध्यमाम्

अस्मदाचार्य पर्यन्ताम्

वन्दे गुरु परम्पराम्

विषय सूचि

अक्टूबर 2022

पंचकोशादि योगेन
तत्तान्मय इव स्थितः।
शुद्धात्मा नीलवस्त्रादि
योगेन स्फटिको यथा।।
(आत्मबोध श्लोक 15)

जिस प्रकार स्फटिक अपने समीपस्थ वस्त्र आदि के नीले रंग के कारण नीला प्रतीत होता है, उसी प्रकार शुद्ध आत्मा पांच कोशों की सन्निधि के कारण उसके गुणों से युक्त प्रतीत होने लगती है।

पूज्य गुरुजी का सन्देश

कामना का निर्मूलन

जीवन्मुक्त वह होता है, जो जीते जी संसार के बन्धन से मुक्त हो गया। जीवन्मुक्त पूर्णकाम का ही पर्याय है। प्रत्येक जीव की समस्त कामनाओं के गर्भ में यही चाह होती है कि एक दिन वह पूर्णकाम हो जाएं, अर्थात् अब किसी प्रकार की कामनापूर्ति की अपेक्षा ही न रह जाएं। कामना का होना ही बन्धन की अनुभूति देता है। क्योंकि कामना का अस्तित्व ही अपूर्ण होने का लक्षण है।

कामना की पूर्ति के पीछे अहं अर्थात् जीवभाव की संतुष्टि की ही प्रेरणा होती है। अज्ञानवशात् अपने आपको एक क्षूद्र जीव मान लेने के उपरान्त उसका असन्तुष्ट होना स्वाभाविक है। हर कामना में तृप्ति व कृतार्थता की आकांक्षा होती है। विविध कामनापूर्ति को ही सुख व सफलता का पर्याय मान लेता है। उससे सुख की अनुभूति अवश्य होती है; किन्तु कुछ

कामना का निर्मूलन

क्षणमात्र के लिए। उसके उपरान्त कुछ ही समय में पुनः यथास्थिति अर्थात् अपूर्ण व असंतुष्ट होकर जीने लगते है। कामना अत्यन्त शक्तिशाली है, आज वही मानों हमारा जीवन संचालित करती है। हम व हमारी कल्पनाशक्ति के द्वारा कामना व उससे दुनिया बनी है। कामना से हमारे कर्म की दिशा निर्धारित होती है। कामना ही मरणोपरान्त की गति को निश्चित करती है अर्थात् कामना के अनुरूप ही आगे का जीवन प्राप्त होता है।

कामना का निर्मूलन न तो कामना के दमन से होता है, न ही कामना की पूर्ति से।

कामना के सामर्थ्य को तथा उसके पीछे विद्यमान अपनी धारणाओं को अच्छी तरह देखना चाहिए। अज्ञानज कामना ही हमारे जीवन की विविध परिस्थितियां देती है। वेदान्तज्ञान के लिए उन समस्त धारणाओं को नकारना पडेगा। कामना का हेतु अविद्या है। इस अविद्या, काम और कर्म को ही हृदयग्रंथि कहा है।

वस्तुतः इस समर्थ कामना के स्वामी हम स्वयं है। कामना अहं की संतुष्टि के लिए करने पर वह कभी मुक्ति नहीं देती। जो कामना अहं की सन्तुष्टि के

कामना का निर्मूलन

लिए होती है, वही दोषवान है। यदि संवेदना से युक्त होकर, अन्य के हित तथा सेवा से प्रेरित कामना होती है, तो वह सब के लिए आशीर्वादरूपा तथा आध्यात्मिक उत्थान का हेतु बनती है। भगवान ने गीता में धर्म से अविरुद्ध कामना को विभूतिरूपा बताया। दोष कामना का नहीं, उसके पीछे विद्यमान मोह का है। जो कामना पूर्णता से उद्भुत होती है, उसमें किसी प्रकार की दीनता व पराधीनता नहीं होती है। अतः संसार व तज्जनित दोषों से रहित होते है।

कामना का निर्मूलन

वेदान्त का जीवनदर्शन यह है कि स्वकेन्द्रित कामनापूर्ति के अभाव में भी हम अपने आपमें पूर्ण हो सकते है, क्योंकि उसके पीछे क्षूद्र मैं ही नहीं होने से, पूर्ण होने की अपेक्षा नही है। अतः कुछ करने वा न करने के संकल्प से मुक्त होकर जीते है। वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति का यही सत्य है कि हर व्यक्ति पूर्णकाम व ब्रह्मस्वरूप है, उसे पूर्णता के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नही है। कामना को निमित्त बनाकर जीवन्मुक्त का लक्षण दिया जाता है कि वह आप्तकाम ही कृतात्मा है कि जिसकी कामना विलय हो चूकी है। उन्होंने कामना का दमन नहीं किया।

जीवन्मुक्त की कामना अपनी ब्रह्मस्वरूपता को जानने के द्वारा निवमूल हो चूकी है।

कामना अत्यन्त उर्जावान होने से उसका दमन सम्भव भी नहीं होता है। दमन से मन में अनेकों विकृतियां हीजन्म लेती है। कामना को विषय वा अनात्मा से परिवर्तित करके आत्मविषयक अत्यन्त तीव्र कामना होनी चाहिए। यही परिपूर्ण होकर जीने की प्रस्तावना है। अन्य सब कामना देखादेखी व कल्पना पर

कामना का निर्मूलन

आधारित, कभी पूर्ण नहीं करती किन्तु पराधीन व असंतुष्ट बनाए रखती है। यह दोष दीखने पर कामना के हेतु व मूल कारण की खोज आरम्भ करते है। जबतक यथार्थ का ज्ञान प्राप्त कर अपनी ब्रह्मस्वरूपता में स्थित नहीं होते है, तबतक कामना का बोझ बना रहता है और संसारचक्र अनवरत रूप से चलता रहता है। कामना के निर्मूलन के लिए इस अविद्या, काम, कर्मरूप ग्रंथि का भेदन होना पडेगा। जीवन्मुक्त होने का यही तरीका है।

वेदान्त लेख
अहम् ब्रह्मास्मि

नायमात्मा प्रवचनेन..

ब्रह्मज्ञान का लक्षण स्वस्थ होकर पूर्णता, प्रेम, निरपेक्षता से, उत्साहपूर्ण, आनन्द से जीना है, न कि आनन्द के लिए। ऐसी अवस्था ही आदर्श, स्वस्थ जीवन का पर्याय है। यह ब्रह्मज्ञान से ही सम्भव होता है – जहां ऐसे मैं के बारे में जानते है कि जो अपने आपमें पूर्ण है। इस सत्य में जगना ही प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। आज अपने आपको जो जानते है, वह कल्पना पर आधारित है। अपने यथार्थ को जानने के लिए श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ गुरु–उपसदन करके, उनसे वेदान्त शास्त्र का अच्छी तरह श्रवण व अध्ययन करें। श्रुति स्वयं बताती हैं कि 'आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः...।

आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः निदिध्यासितव्यः।।

नायमात्मा प्रवचनेन...

साथ ही श्रुति यह भी बता रही है कि नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य:। यदि शास्त्र का प्रामाणिक ढंग से सांगोपांग अध्ययन कर भी लिया तो भी आवश्यक नहीं है कि अपने अन्दर जाग्रति हो जाएं। सत्य में जाग्रति हेतु यद्यपि बाहर से प्रामाणिक ज्ञानप्राप्ति प्रथम आवश्यकता है। किन्तु यदि उसके उपरान्त भी छोटे जीव वा व्यक्ति बने रहे तो हमें लाभ नहीं हुआ। पहले तो हमें छोटे, व्यक्ति बनकर जीने से उच्चाटन तथा पूर्णता में जगने की तीव्र उत्कण्ठा होनी चाहिए। अन्यथा व्यक्ति को ज्ञान होता है वह अहं की संतुष्टि का हेतु बनता है व श्रवण विफल हो जाता है।

हम व्यक्ति बनकर स्थित है। व्यक्तितत्व को धारण करने पर अवस्था परिवर्तन के साथ व्यक्तितत्व और भी स्पष्ट होता जाता है। उसी पर आधारित धारणा से युक्त होकर अपने बारे में छोटा होना निश्चय कर लिया है। बाहर से भी अध्यारोप करते हुए, उसे संस्कारित किया गया है। इसके उपरान्त

नायमात्मा प्रवचनेन...

आनन्द के लिए ही जीवन होने लगता है। पहले यह निश्चय करना पडेगा कि यह जीवभाव एक समय नहीं था, शनैः2 स्पष्ट हुआ है। अतः यह काल्पनिक, मिथ्या है। मुक्ति की अवस्था में हमें बड़ा बनना नहीं है किन्तु क्षूद्र व्यक्ति का अभाव है – यह निश्चय करना है।

मुक्ति जीव को प्राप्त नहीं होती, किन्तु जीव को मिथ्या जानने प्राप्त होती है।

श्रवणादि के समय यह समस्या का रियलाइजेशन होना चाहिए कि छोटेपन से मुक्ति चाहिए। तब ही श्रवण सफल होता है। मूलभूत समस्या का समाधान जीवभाव से परे जाना है– यह नहीं जानने पर जो विद्या जीव के निषेध के लिए होनी थी, वह अहं की संतुष्टि के लिए बन जाती है। यह जीवभाव ही संसार का कारण है, वही समस्त कामनाएं, राग–द्वेष, आसक्ति आदि रूप विकृति की जड़ है। यह कामना करनेवाला जीव रस्सी में सांप की तरह काल्पनिक है। उसीका आज साम्राज्य स्थापित है, उसी पर आश्रित जन्म–जन्मान्तर की योजनाएं बना लेते है। इस काल्पनिक जीवभाव से मुक्ति के लिए ही श्रवणादिरूप ओषधि है। लक्ष्य

नायमात्मा प्रवचनेन...

के स्वरूप तथा इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर श्रवणादि करने पर उसमें सतत विकास होता जाएगा। यह ज्ञान ही छोटेपन से निजात दिलाएगा। सर्पस्थानीय जीव का निषेध होने पर ही रस्सीस्थानीय अपनी ब्रह्मस्वरूपता का ज्ञान होगा। सतत सजग रहकर देखना होगा कि किसी भी कार्यकलाप से अहं की संतुष्टि करना चाहते है या उसका निषेध करना चाहते है। सब से पहले मूलभूत समस्या का ज्ञान व उसका संज्ञान होना चाहिए। तब ही यह ज्ञान आशिर्वाद देगा। इसके लिए हमें ज्ञान का वरण करना होगा।

नायमात्मा प्रवचनेन...

जो आत्मा का वरण करता है, उसे ही लक्ष्य की सिद्धि होती है। परमात्मा का वरण करने पर ही वे हमारा मानों वरण करते है अर्थात् उसे ही शास्त्रादि की कृपा प्राप्त होती है। उसीके लिए ईश्वर की भक्ति अनिवार्य है। अतः विनम्रता से ईश्वर के प्रति शरणागत होते है। हमारा यही लक्ष्य यह हो कि ईश्वर हमें चाहने लगें। यह ध्यान में रखें कि जीव के पुरुषार्थ की सीमा होती है, अतः ईश्वर व गुरु के आशीर्वाद के लिए पात्र बनना होगा। समस्त आग्रहादि त्याग करके उपलब्ध होते है, तब सतत अहं का निषेध होता जाता है, जिसका पर्यवसान अपनी ब्रह्मस्वरूपता में जाग्रति होती है।

लघु वाक्यवृत्ति

श्रुतिस्मृतिपुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

मुक्ताभिरावृतं सूत्रं
मुक्तयोर्मध्य ईक्षते।
तथावृता विकल्पै-श्चित्
स्पष्टा मध्ये विकल्पयोः।।

जैसे मोतियों से आवृत्त सूत्र दो मोतियों के बीच में निरावृत्त दीखता है, वैसे ही बुद्धि की समस्त वृत्तियों से व्याप्त चेतनता दो वृत्ति के मध्य में निर्विघ्न दीखाई देती है।

लघु वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि बुद्धि की वृत्तियां प्रतिक्षण बदलती रहती है, किन्तु उनकी साक्षी चेतनता में कोई परिवर्तन नहीं होता है। मोतियों की माला के प्रत्येक मोतियों में अनुस्यूत सूत्र की तरह ही चेतन स्वरूप साक्षी समस्त बुद्धिवृत्ति को व्यात करके स्थित है।

'चेतनस्वरूप साक्षी समस्त वृत्तियों का प्रकाशक, वृत्तियों में व्याप्त है।'

प्रत्येक वृत्ति किसी न किसी अनित्य, अस्थायी नामरूप को विषय करनेवाली होती है। अतः वृत्तियों में सतत परिवर्तन होता है। जब तक माला के मोतियों का महत्व है, और उस पर ही दृष्टि टिकी हुई है; तब तक उसे पिरोये रखकर माला का रूप देनेवाले सूत्र

लघु वाक्यवृत्ति

का न महत्व समझ में आता है और न ही वह दीखाई देता है। इस सूत्र के अभाव में माला व्यवहारयोग्य नहीं बन सकती है। वैसे ही नामरूप को विषय करनेवाली वृत्ति का आज हमारे लिए महत्व बना हुआ है, अतः उसे देख नहीं पाते है। जब तक अनित्य का महत्व बना रहेगा तब तक जीवन में भय, अतृप्ति आदि बने रहेंगे और यह संसारचक्र अनवरत रूप से चलता रहेगा।

जब अन्तर्मुख होकर बन्धन के स्वरूप को समझते है कि हम नित्य की प्राप्ति करना चाहते है, किन्तु उसके लिए इन अनित्य विषयों पर आश्रित हो रहे है। समस्त नामरूपात्मक विषयों के गुणदोष की अच्छी तरह समीक्षा करके उसका अस्थायित्व दीखता है, तब उसके प्रति महत्वबुद्धि खतम होने लगती है।

लघु वाक्यवृत्ति

महत्वबुद्धि की समाप्ति होने पर ही बुद्धि में वृत्तियों का विक्षेप शान्त होने लगता है। मन में कुछ करने वा न करने के संकल्प से मुक्ति होकर संन्यस्तता को प्राप्त होता है। तब ऐसे शान्त, संन्यस्त मन में वृत्तियों की मात्रा भी शान्त होने लगती है।

ऐसे शान्त मन में यह देखना चाहिए कि दो वृत्तियों के मध्य में क्या है? अर्थात् एक वृत्ति शान्त होकर दूसरी वृत्ति का उदय होता है; वहां उन दो वृत्तियों के मध्य में क्या है? तब यह दीखता है कि जैसे मोतियों से आवृत्त सूत्र दो मोतियों के बीच में बगैर किसी आवरण के स्पष्ट दीखता है। वैसे ही इन वृत्तियों के मध्य में चेतनसत्ता विराजमान है। यह चेतनसत्ता उस समय निरावृत, स्पष्ट रूप से दीखाई देती है। अतः उसे प्रयत्नपूर्वक देखना चाहिए।

प्रेम में प्रेमी को चाहा जाता है। आसक्ति में प्रेमी से चाह होती है।

गीता मे हृदयं पार्थ

गीता मे हृदयं पार्थ

महाभारत में एक स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि, 'गीता मे हृदयं पार्थ'। 'अर्जुन! गीता मेरा हृदय ही है।' वस्तुतः गीता भगवान के प्रेम और करुणा के वशीभूत द्रवित हृदय का ही शब्दरूप से प्राकट्य है।

जिस तरह इस देह की जीवन्तता, उसके समस्त कार्यकलाप का केन्द्रबिन्दु हमारा यह स्थूल हृदय होता है, उसी तरह समग्र व्यक्तितत्व का आधार जो 'मैं' है, वह हृदय है। इस व्यक्तितत्व के आधारभूत हृदय में हमारे मूलभूत अपने बारे में निश्चय, और उसी पर आधारित जगत तथा अन्य विषयक निश्चय होते है। किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसीसे होती है कि उनके अपने बारे में मूलभूत क्या निश्चय विद्यमान है। अन्य व्यवहार, कर्म, भावना आदि समस्त अभिव्यक्तियां तो इसके कार्यरूप होती

गीता मे हृदयं पार्थ

है। किसी की अभिव्यक्त कर्म आदि को सतही मात्र देखकर निश्चय नहीं किया जा सकता है और न ही कर्म, भावना आदि में सतही परिवर्तन से मूलभूत परिवर्तन तथा उसमें स्थायित्व सम्भव होता है। यह तो शरीर के किसी गम्भीर रोग को सतही रूप से निदान करने जैसा है। उससे रोग की जड़ से समाप्ति नहीं होती है, अतः स्वस्थता की भी असम्भावना ही हो जाती है।

भगवान अपने इस गम्भीर उक्ति के द्वारा यही बताना चाहते हैं कि आज हम जो भी हैं, जैसे भी हैं यह केवल हमारे हृदय की गहराई में विराजमान हमारे निश्चयों की वजह से है। उनके व्यक्तितत्व में अदम्य उत्साह, निर्भीकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, प्रेम, करुणा और आत्मयीता की सुगन्ध विराजमान है। समस्त दैवीगुण पूर्णतः स्वस्थता से समाविष्ट है। उनके व्यक्तितत्व की चर्चा शब्दों से परे हैं। उनके कर्म में सतही रूप से विरोधाभास प्रतीत होते

गीता मे हृदयं पार्थ

हुए भी उनमें एक अद्‌भुत समन्वय है। उसमें क्षूद्र अहं की संतुष्टि की दुर्गन्ध तो कोशों दूर है, किन्तु तद्विलक्षण पूर्णता की सुगन्ध से परिपूर्ण दीखती है। अनेकों महान–महान, मन को उद्वलित करनेवाले निर्णय किएं, उसे जीएं भी किन्तु उनमें से किसी भी कृत्य के सन्दर्भ में पश्चात्ताप का नामोनिशान नहीं था। ऐसा जीवन अपनी क्षूद्र अहं के धरातल की सोच की अभिव्यक्ति हो तो निश्चित रूप से जघन्य, विकृत और समाज के लिए भी अत्यन्त हानिकर्ता सिद्ध होती। किन्तु उनके प्रत्येक कार्य में दूरदर्शिता, सब के कल्याण की भावना, सर्वत्र धर्म स्थापना का ही प्रयोजन दीखता है। जिसे देखकर यही विचार आता है कि ऐसा कार्य एक साधारण मनुष्य तो कर ही नहीं सकता है, अतः निश्चितरूप से वे भगवान के अवतार ही थे। ऐसा कहकर उन्हें अपने से कोशों दूर बिठा देते हैं, जिससे कि उनके अवतार लेने का प्रयोजन भी विफल हो जाता है।

देह की संकुचिता में अभिव्यक्त होने पर भी, इसी विकृतमानस लोगों के मध्य में रहकर भी ऐसा पूर्णता

‘भगवान के अवतार के जीवन से जीवन्मुक्त की स्थिति ज्ञात होती है।’

गीता मे हृदयं पार्थ

का जीवन जीते हुए वे यही दीखाना चाहते हैं कि यह असम्भव नहीं है। इसीलिए वे यह बताते हैं कि गीता मे हृदयं पार्थ' गीता हमारे व्यक्तितत्व के सारभूत है। समस्त अज्ञान में विद्यमान, अर्जुनस्थानीय लोगों के प्रति यह सन्देश है कि यदि तुम भी हमारे जैसा परिपूर्णता, उत्साह, क्रियादक्षता, निर्भीकता, प्रेम, निरपेक्षता और असंगता से युक्त जीवन चाहते हो तो हमारे हृदय को समझना होगा। यही गीता के माध्यम से प्रकट़ है। अतः निःसन्देह श्रीमद् भगवद्गीता कोई साधारण ग्रंथ वा शब्दमात्र नहीं होकर, अत्यन्त पवित्र, दिव्य भगवत्स्वरूपणी है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री लक्ष्मण चरित्र

– 23 –

बन्दउं लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता॥
रघुपति कीरति बिमल पताका। दण्ड समान भयउ जस जाका॥

श्री लक्ष्मण चरित्र

वनयात्रा के दौरान अनेक ऐसे पात्र सामने आते हैं, जिनका चरित्र और स्वभाव रामानुज लक्ष्मण से सर्वथा भिन्न था, किन्तु लक्ष्मण ने उनके प्रति सम्बन्ध में इसे लेशमात्र भी आड़े आने नहीं दिया। सुग्रीव और विभीषण जैसे व्यक्ति इसी श्रेणी में आते हैं। सुग्रीव का दुर्बल चरित्र लक्ष्मण को प्रिय हो–यह सम्भव नहीं था। तथापि विभीषण को वे प्रभु के मित्र के रूप में सर्वदा सम्मान देते रहे। विभीषण के लिए तों वे जिस सीमा तक आगे बढ़े, वह विश्व इतिहास में अतुलनीय है। विभीषण और उनका मतभेद उनके परिचय के प्रथम दिन में ही सामने आ गया। सुमुद्र पार करने की समस्या को लेकर विभीषण के द्वारा दी गई सम्मति को उन्होंने कायरता और क्लैब्य के रूप में देखा। रामभद्र के द्वारा विभीषण के मत का समर्थन किए जाने पर भी वे उसकी कठोर आलोचना से नहीं चूके। उत्तेजित स्वर में उन्होंने कहा कि, 'कायर और आलसी ही दैव

श्री लक्ष्मण चरित्र

की पुकार करते हैं। आप शर–सन्धान के द्वारा समुद्र को सुखा दीजिएं।'

किन्तु इस अप्रियता के कारण विभीषण की उपेक्षा तो दूर, अवसर आने पर उनके संरक्षण के लिए श्री लक्ष्मण प्राणों की बाजी भी लगा देते हैं। मेघनाथ ने लंका के रणांगण में रामानुज पर शक्ति प्रहार किया और वे मूर्च्छित हो गए, पर गीतावलि रामायण में गोस्वमीजी ने स्पष्ट किया है कि मेघनाथ के आक्रोश के मुख्य पात्र विभीषण थे, इसलिए शक्तिप्रहार भी उन्हीं पर किया गया था। लक्ष्मण को उन क्षणों में यह स्मृति हो आई कि जब प्रभु ने विभीषण को शरणागत के रूप में स्वीकार करते हुए घोषणा की थी कि, 'रखहउं ताहि प्रान की नाईं' और विभीषण को पीछे धकेलकर वे शक्ति को स्वयं छाती में झेल लेते हैं।

मेघनाथ के उस शक्ति–प्रहार से उनका शरीर भले ही धूल–धूसरित हो गया हो किन्तु प्रभु की यश–पताका को उन्होंने लंका के रणांगण में धूल–धूसरित होने से बचा लिया। प्रभु के अन्त:करण में उन

श्री लक्ष्मण चरित्र

क्षणों में जिस नैराश्य और अवसाद का उदय हुआ उसकी तुलना उनके चरित्र के किसी प्रसंग से नहीं की जा सकत। महाराज श्री दशरथ की मृत्यु से भी वे शोकातुर हुए थे। प्रियतमा मैथिली के वियोग में वे उन्मत्त जैसे हो उठे थे। किन्तु लक्ष्मण के वियोग में उन्हें अपना जीवन जिस प्रकार व्यर्थ लगने लगा वैसी अनुभूति उन्हें कभी नहीं हुई। लक्ष्मण उनके लिए एक भाई ही नहीं थे। बहुधा उन्होंने कई अवसर पर लक्ष्मण की तुलना में दूसरों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया था। किन्तु उसकी वास्तविकता इन क्षणों में सामना आ गई।

वे सराहनाएं इनके औदार्य की परिचायक मात्र ही नहीं थीं, सत्य तो यह है कि लक्ष्मण से बढ़कर उन्हें कोई प्रिय नहीं है। इसलिए व्याकुलता के इन क्षणों में जब बाह्य विवेक के सारे नियन्त्रण समाप्त हो गए, तब उन्हें लक्ष्मण के अभाव में सारा संसार सूना लगने लगा। यहां तक कि वे यह कह बैठें कि यदि मैं यह जानता कि वन में लक्ष्मण जैसे भाई का वियोग होगा तो मैं पिता की आज्ञा का भी तिरस्कार कर देता। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि यदि सीता और तुम्हारे बीच चुनाव होता तो मैं तुम्हें ही चुनता।

जीवन्मुक्त

– २६ –

उत्तरकाशी
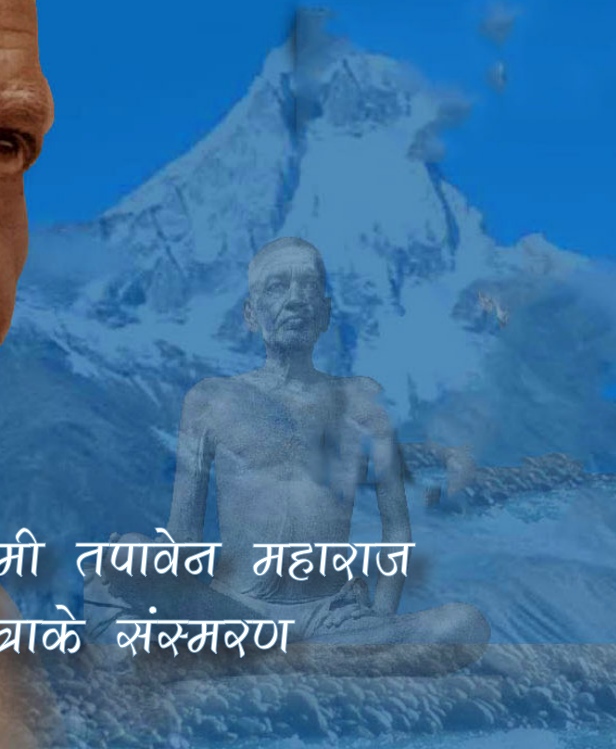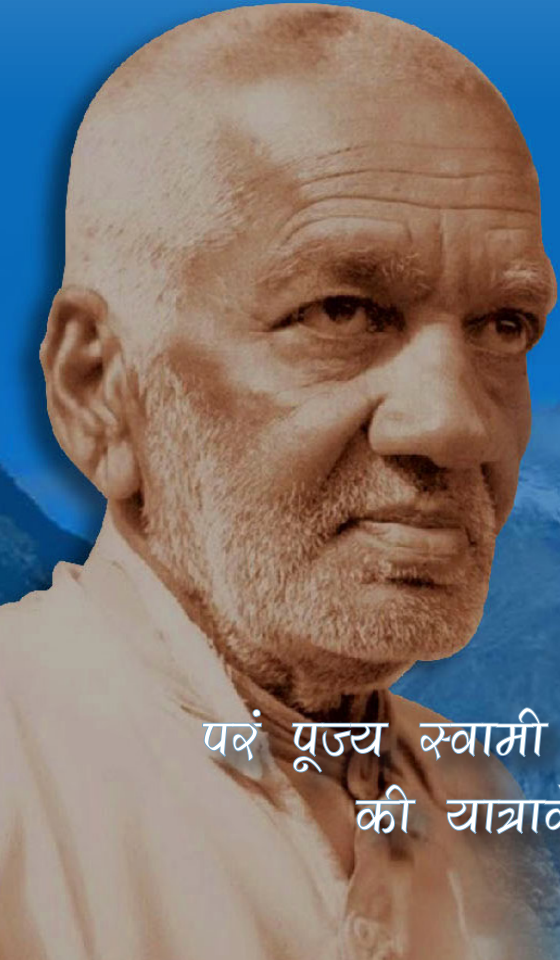
परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

हृषीकेश से यों छः सात मील निबिड वनान्तरोंसे उपर की ओर चढते जाएँ तो ‘नरेन्द्र नगर’ नामक स्थान उपलब्ध होता है। यह ‘टहरी’ नामक स्थान इन हिमालय प्रदेशों के राजा के सुखवास की एक रमणीय भूमि है। यहाँ से पर्वत शिखरों से होकर टेढ़ा मेढ़ा रास्ता सर्पाकृति में पश्चिमोत्तरी दिशा में जा रहा है। नरेन्द्रनगर से बाहर मील की दूरी पर स्थित ‘पूक्कोट’ नामक प्रसिद्ध स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि इस स्थान पर पर्वतों में चीते रहते है। यद्यपि मैं उस रास्ते से कभी कभी अकेले यात्रा करता था, तथापि मुझे तो किसी चीते के दर्शन का सौभाग्य नहीं मिला है। हिमालय के पुण्यात्मा व्याघ्र कैसे पापात्माओं की

जीवन्मुक्त

नजरों में आ सकते है? अथवा यह भी विचार मेरे मन में आता है कि शायद मेरे सुकृत परिपाक से देवात्मा हिमालय ने शार्दूलों को लाकर मेरे सामने विघ्न उपस्थित न करने की कृपा की हो और इसलिए मुझे उनका दर्शन न मिला हो। पर्वत के प्रांत भागों के वनों से होकर मार्ग फिर भी आगे उपर की ओर बढता जा रहा है। इस प्रकार वन शैलों और शैल नितंबों में इधर उधर स्थित कई गाँवों को पार करके पच्चीस मील की यात्रा करने पर पतित पावनी परम देवता भागीरथी के दर्शन उपलब्ध होते है। ह्षीकेश में बिछुडी हुई जाह्नवी माता यहां फिर अक्षि पक्षों में प्रत्यक्ष होकर आशीर्वाद देती हैं अहा! हिमालय के अन्दर नित्य निर्मल तथा नितान्त सुन्दर होकर प्रवाहित गंगा का केवल दर्शन ही कितना आनन्ददायक है। हे गंगे! हे देवी! हे जगज्जननी! तुम्हारी सुन्दरता तथा तुम्हारी महिमा का व्यास प्रभृति महर्षि पुंगवों ने उँची आवाज में जो गान किया है; उसका रहस्य तुम्हारे पास आकर तुम्हारे चरण कमलों की परिचर्या करनेवालों को छोड दूसरे जन कैसे जान सकते है?

पौराणिक गाथा

किरात-अर्जुन युद्ध

किरात-अर्जुन युद्ध

महाभारत के युद्ध की तैयारी रूप अर्जुन अनेकों अस्त्र-शस्त्र का उपार्जन कर रहा था। उसके अन्तर्गत कर्ण को मार गिराने के लिए उन्हें पाशुपत अस्त्र की आवश्यकता थी। उसके लिए इन्द्रनील पर्वत पर भगवान शिव की प्रतिमा बनाकर घोर तपस्या कर रहा था। उनकी कठिन तपस्या के ताप से पूरा वनप्रदेश जलने लगा। उससे वहां के निवासी समस्त ऋषिगण घबड़ा गएं और वे शिवजी के पास पहुंचे और महादेव से निवेदन करने लगें कि कोई तपस्वी बहुत उग्र तपस्या कर रहा है, उससे समूचा वनप्रदेश जल उठा है। उससे हमें वहां रह पाना दु:श्वार हो गया है।

यह सुनकर महादेवजी ने कहा कि वह कोई ओर नहीं किन्तु पाण्डुपुत्र अर्जुन है, जो धर्मयुद्ध की तैयारी के लिए पाशुपत अस्त्र की चाह से तपस्या कर रहा है। अत: हमें पहले उनकी परीक्षा लेनी होगी। महादेंव ने ऋषियों को आश्वस्त करते हुए वापिस भेजा।

किरात और अर्जुन युद्ध

महादेव एक किरात का वेश धारण करके वहां पहुंचे, जहां अर्जुन तपस्या कर रहा था। वहीं पास में एक विकट राक्षस रहता था। उससे समस्त ऋषिगण भी सतत भयभीत रहते थे। राक्षस ने अर्जुन को अकेला देखा तो वह सुवर के रूप में वहां पहुंचा। उसे देखकर अर्जुन ने उन पर बाण चलाया। उसी समय किरातवेशधारी महादेव ने भी बाण चलाया। उससे सुवर वहीं पर ढेर हो गया। उसे देख किरात समक्ष आएं किन्तु अर्जुन ने कहा कि ये शिकार तो मेरा है।

उस पर दोंनों की आपस में बहस छिड़ गई। यह बहस अन्ततः युद्ध में परिवर्तित हो गई। दोनों के मध्य में अत्यन्त भयंकर युद्ध हुआ। लम्बे समय तक

किरात और अर्जुन युद्ध

युद्ध चलने से अर्जुन शनैः शनैः शनैः थकने लगा और एक बार मूर्छित भी हो गया। किन्तु पुनः होश सम्हालकर युद्ध करने लगा। जब अर्जुन ने देखा कि वो एक साधारण से किरात से युद्ध हारने लगा है, तो उनके मन में शंका हुई कि यह कोई साधारण किरात नहीं हो सकता है।

यह सोचकर अर्जुन उनके समक्ष शरणागत हो गया और बोला, कि आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं लग रहे हैं। कृपया अपने वास्तविक रूप में सामने आएं। अर्जुन की विनम्र शरणागति देखकर किरात रूप त्यागकर महादेवजी अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुएं और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही पाशुपत अस्त्र भी प्रदान किया। अस्त्र को देते समय महादेवजी ने यह भी शर्त रखी कि इसका प्रयोग एक ही बार हो सकेगा। और यदि अपने स्वार्थ वा अधर्म के लिए उसका प्रयोग किए जाने पर वह व्यर्थ हो जाएगा।

इस प्रकार दृढ़व्रती, धर्ममार्ग परायण अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त हुआ।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी का संन्यासदीक्षा दिन

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुदेव का पादुकापूजन

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद लेते हुए

आश्रम समाचार

भण्डारे का आयोजन

आश्रम समाचार

मुण्डकोपनिषद् समापन (११ वर्ष का अनुष्ठान)

आश्रम समाचार

मुण्डकोपनिषद् समापन

आश्रम समाचार

मुण्डकोपनिषद् समापन

आश्रम समाचार

मुण्डकोपनिषद् समापन

आश्रम समाचार

मुण्डकोपनिषद् समापन

आश्रम समाचार

ओनलाईन ज्ञानयज्ञ (साधना पंचकम्)
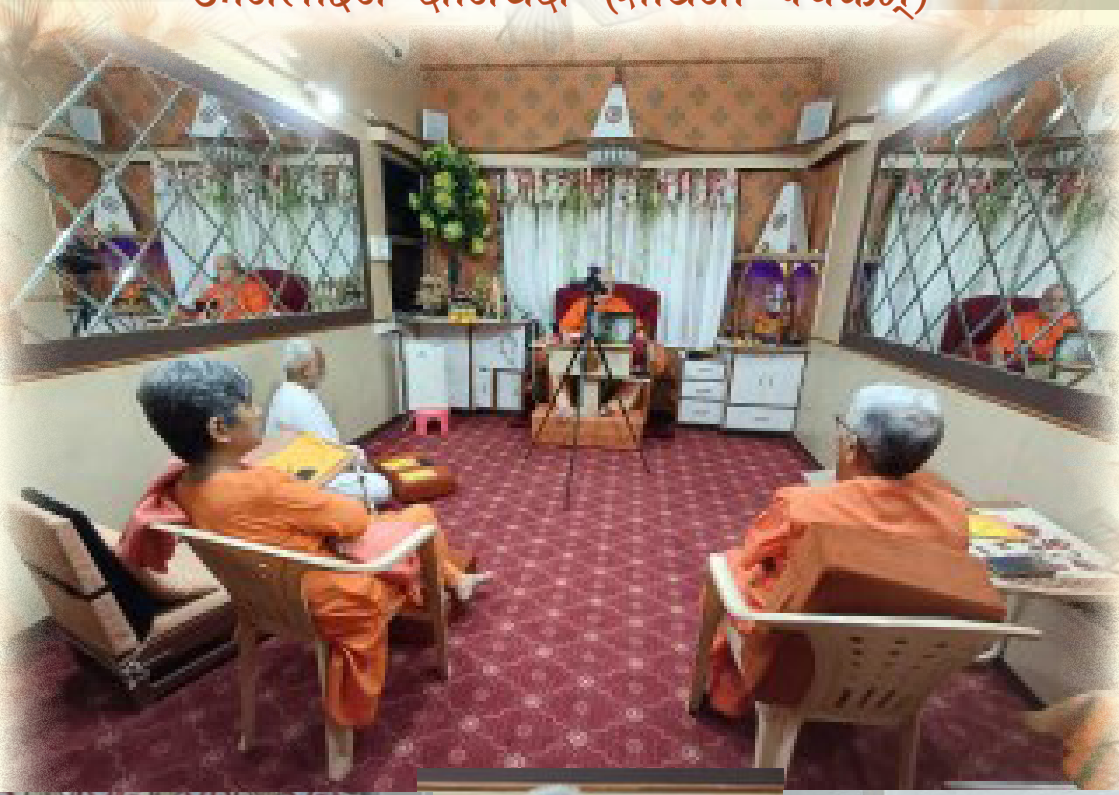
आश्रम समाचार

ओनलाईन ज्ञानयज्ञ समापन

आश्रम समाचार

ज्ञानयज्ञ समापन पर श्री गंगेश्वर महादेवपूजन

आश्रम समाचार

डॉ सिद्धार्थ अरोरा द्वारा महादेव अभिषेक

आश्रम समाचार

ओम् श्री गंगेश्वराय नमः

आश्रम समाचार

ओम् श्री गुरुभ्यो नमः

आश्रम समाचार

ओम् श्री गुरुभ्यो नमः
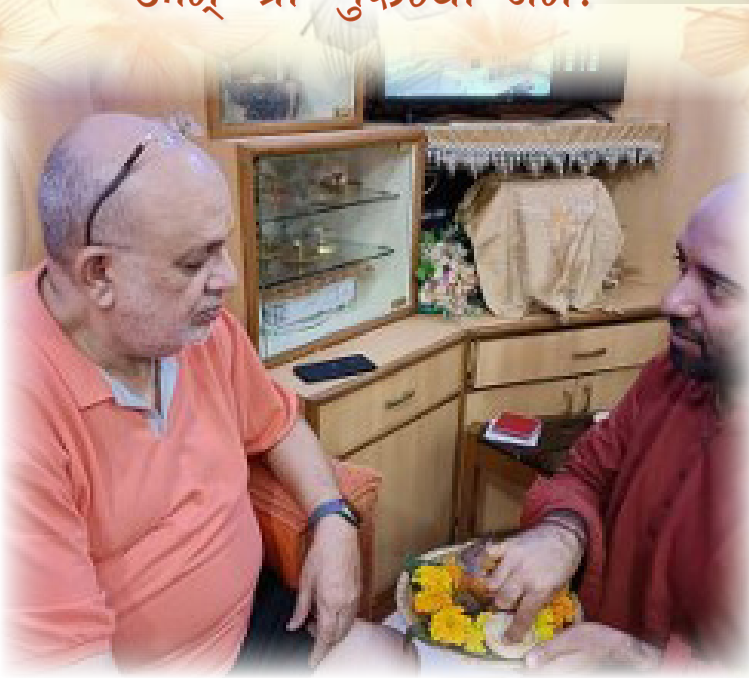
आश्रम समाचार

ओम् श्री विघ्नेश्वराय नमः

आश्रम समाचार

महादेव पूजन एवं श्लोकपाठ

आश्रम समाचार

श्री गंगेश्वर महादेव पूजा एवं अभिषेक

आश्रम समाचार

आश्रम समाचार

चर्चित एवं निधि गर्ग को पुत्ररत्नप्राप्ति

आश्रम समाचार

वेदान्त आश्रम में पुष्पों की बहार

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

वेदान्त आश्रम में

गीताकक्षा का आरम्भ

सम्पूर्णगीता अध्ययन – शांकरभाष्य के साथ

पूज्य गुरुजी के द्वारा

Internet

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

~ Sadhna Panchakam

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

- Sundar Kand Pravachan

~ Prerak Kahaniya

- Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

- Kathopanishad Pravachan

- Shiva Mahimna Pravachan

- Hanuman Chalisa

~ Shiv Mahimna Stotram (Sw. Samatananda)

Internet

Audio Pravachans

~ Sadhna Panchakam

~ Drig Drushya Vivek

~Upadesh Saar

~ Prerak Kahaniya

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Atmabodha Lessons

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

~ Vedanta Sandesh - Oct '22

~ Vedanta Piyush - Sep '22